तरबूज के उपन्यास खेती

चंदन कुमार*, दिपक कुमार गुप्ता**, एवं धीरज सिंह***

*भाकृ-अनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली-मारवाड़ 306 401 (राज.)
**भाकृ-अनुप-काजरी, कृषि विज्ञान केन्द्र, पाली-मारवाड़ 306 401 (राज.)
***थानियों अनुसंधान संस्थान, पाली-मारवाड़ 306 401 (राज.)

तरबूज एक उल्लेखनीय परिवार की गमर्मियों की सब्ज़ी तथा फल है जो कि गमर्मी में पैदा किया जाता है। यह फसल उत्तरी भारत के भागों में अधिक पैदा की जाती है। सब्जी के रूप में कच्चे फल जिनमें बीज कम व गुदा ही प्रयोग किया जाता है। तरबूज की फसल ताराई व गंगा, यमुना के क्षेत्रों में अधिक पैदा किये जाते हैं। तरबूज एक गमर्मीयों का मुख्य फल है जो कि मई-जून की तेज धूप व लू के लिए लाभदायक होता है। फल गमर्मी में अधिक स्वादिष्ट होते हैं। फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है। तरबूज चूंकि पोषक तत्व भी होते हैं जैसे कैलोरीज, मैनीशियम, सल्फर, लोहा, आक्जेलिक अम्ल तथा पोटेशियम की अधिक मात्रा प्राप्त होती है तथा पानी की भी अधिक मात्रा होती है।

भूमि व जलवायु

तरबूज के लिये अधिक तापमान वाली जलवायु सबसे अच्छी होती है। गर्म जलवायु अधिक होने से तुल्य अच्छी होती है। ठंडी व पाली जलवायु उपयुक्त नहीं होती। अधिक तापमान से फलों की वृद्धि अधिक होती है। बीजों के अंकुरण के लिये 22-25 डिग्री सें.प्रे. तापमान सर्वोत्तम है तथा संतोषजनक अंकुरण होता है। नमी वाली जलवायु में पत्तियों में बीमारी आने लगती है।

खाद एवं उद्वर्तक का प्रयोग

तरबूज को खाद की आवश्यकता पड़ती है। गोबर की खाद 20-25 ट्राइल प्रति हेक्टर को रेतीनी भूमि में भली-भांति मिला दें। यह खाद क्यारियों में डालकर भूमि तैयारी के समय मिला दें। 80 कि.ग्रा. नत्रजन प्रति हेक्टर देना चाहिए तथा फास्फेट व पोटाश की मात्रा 60-60 कि.ग्रा. प्रति हेक्टर की दर से दें। फास्फेट व पोटाश तथा नत्रजन की आधी मात्रा को
भूमि की तैयारी के समय मिलाना चाहिए तथा शेष नक्सल की मात्रा को बुवाई के 25-30 दिन के बाद दें।

खाद उवर्कों की मात्रा भूमि की उवरशक्ति के ऊपर निर्भर करती है। उवरशक्ति भूमि में अधिक हो तो उवरक बनाने के लिए खाद की मात्रा कम की जा सकती है। बगीचों के लिये तरबूजे की फसल के लिए खाद 5-6 टोकरी तथा यूरिया व फास्फेट 200 ग्राम व पोटाश 300 ग्राम मात्रा 8-10 वर्ग मी. क्षेत्र के लिये पर्याप्त होती है। फास्फेट, पोटाश तथा 300 ग्राम यूरिया को बोने से पहले भूमि तैयार करते समय मिलाये दें। शेष यूरिया की मात्रा लाघ-25 दिनों के बाद तथा फूल बनने से पहले 1-2 चम्मच पौधों में डालते रहें।

तरबूज की उन्नतशील जातियाँ
आसाही-पामाटो, शुगर बेबी, न्यू हेम्पसाइन मिडगेट, अर्का यूरियो, पूसा रसाल, दुर्गापुरा लाल, दुर्गापुरा केसर, धार मानक।

बुवाई समय एवं दूरी
तरबूजे की बुवाई का समय नवम्बर से मार्च तक है। नवम्बर-दिसम्बर में बोई जाने वाली फसल में बीज अधिक, फरवरी-मार्च में बोई जाने वाली फसल में बीज कम लगते हैं। इसलिये औसतन बीज की मात्रा 3-4 किलो प्रति हेक्टर आवश्यकता पड़ती है। बीजों को अधिकतर हाथों द्वारा लगाना प्रचलित है। इससे अधिक बीज बेकार नहीं होता है तथा भारी में हाथ से छेद करके बीज बो दिया जाता है। बगीचे के लिये भारों में 2-3 लगाते हैं तथा इस प्रकार से बीज की मात्रा जाता है। तरबूजे की बुवाई के समय दूरी भी निश्चित होनी चाहिए। जाति व भूमि उवरशक्ति के आधार पर दूरी रखते हैं। तम्बी जाति बनाने वाली के लिये 3 मी.

tहाड़ी जातियों की दूरी रखते हैं तथा ढंगों की आपस की दूरी 1 मीटर रखते हैं। एक थामरे में 3-4 बीज लगाये तथा बीज की गहराई 4-5 सेमी. से अधिक नहीं रखें। कम फैलने वाली जातियों की दूरी 1.5 मी. कतारों की तथा ढंगों की दूरी 90 सेमी. रखें। बगीचों के लिये कम क्षेत्र होने पर दूरी डालने की सिफारिश की जाती है तथा न्यू हेम्पसाइन मिडगेट को बोना चाहिए।

बीज की मात्रा एवं बोने का ठंग व दूरी
बीज की मात्रा बुवाई के समय, जाति तथा बीज के आकार व दूरी पर निर्भर करती है। नवम्बर-दिसम्बर में बोई जाने वाली फसल में बीज अधिक, फरवरी-मार्च में बोई जाने वाली फसल में बीज कम लगते हैं। इसलिये औसतन बीज की मात्रा 3-4 किलो प्रति हेक्टर आवश्यकता पड़ती है। बीजों को अधिकतर हाथों द्वारा लगाना प्रचलित है। इससे अधिक बीज बेकार नहीं होता है तथा ढंगों में हाथ से छेद करके बीज बो दिया जाता है। बगीचे के लिये भारों में 2-3 लगाते हैं तथा इस प्रकार से बीज की मात्रा
20-25 ग्राम 8-10 वर्ग मी. क्षेत्र के लिए पर्याप्त होती है। बीज को हाथ से छेदरोपण करके लगायें।

सिंचाई एवं खरपतवार-नियंत्रण

तरबूज की सिंचाई बुवाई के 10-15 दिन के बाद करें। यदि खेत में नमी की मात्रा कम हो तो धुलने की आवश्यकता है। जाड़े की फसल के लिये पानी की कम आवश्यकता पड़ती है। लेकिन जायद की फसल के लिये अधिक पानी की जरूरत होती है, क्योंकि तापमान बढ़ने से गर्मी हो जाती है जिससे मिठी में नमी कम हो जाती है। फसल की सिंचाई नालियों से 8-10 दिन के अंतर से करते रहें। कहने का तात्पर्य यह है कि नमी समाप्त नहीं हो पायें।

सिंचाई के बाद खरपतवार पनपने लगता है। इनको फसल से निकालना अति आवश्यक होता है अन्यथा इनका प्रभाव पैदा कर देता है। साथ-साथ अधिक पौधों को ठीकर से निकाल देना चाहिए। 2 या 3 पौधे ही रखना चाहिए। इस प्रकार से पूरी फसल में 2 या 3 निकाई-गुड़ाई करें। यदि रोगी व कीटों पौधों हो तो फसल से निकाल दें। जिससे अन्य पौधों पर कीट व बीमारी नहीं लग सकें।

फलों को टोड़ना

तरबूज के फलों को बुवाई से 3 या 3-1/2 महीने के बाद टोड़ना आरंभ कर दें। फलों को यदि दूर भेजना हो तो पहले ही टोड़े। प्रत्येक जाति के हिसाब से फलों के आकार व रंग पर निर्भर करता है कि फल अब परिपक्व हो चुका है। आमतौर से फलों को दबाकर भी देख सकते हैं कि अगर पका है या कच्चा। दूर के बाजार में यदि भेजना हो तो पहले ही फलों को टोड़ें। फलों को पौधों से अलग साधारणपूर्वक करें क्योंकि फल बहुत बड़े या बाल 10-15 किलो के जाति के अनुसार होते हैं। फलों को डंठल से अलग करने के लिये तेज चाकू का प्रयोग करें अन्यथा शाखा टूटने का भय रहता है।

फल को तोड़ना

फलों को तोड़ने के पश्चात तरबूज के फलों को बुवाई से 3 या 3-1/2 महीने के बाद टोड़ना आरंभ कर दें। फलों को यदि दूर भेजना हो तो पहले ही टोड़े। प्रत्येक जाति के हिसाब से फलों के आकार व रंग पर निर्भर करता है कि फल अब परिपक्व हो चुका है। आमतौर से फलों को दबाकर भी देख सकते हैं कि अगर पका है या कच्चा। दूर के बाजार में यदि भेजना हो तो पहले ही फलों को टोड़ें। फलों को पौधों से अलग साधारणपूर्वक करें क्योंकि फल बहुत बड़े या बाल 10-15 किलो के जाति के अनुसार होते हैं। फलों को डंठल से अलग करने के लिये तेज चाकू का प्रयोग करें अन्यथा शाखा टूटने का भय रहता है।